पाठ-22

बोध-कथाएँ

- बृज मोहन

आइए सीखें

■ नैतिक व सामाजिक मूल्य ■ विशेषण एवं विशेष्य ■ तत्सम्, तद्भव, देशज एवं विदेशी शब्द।

मेरे साथ भी हो सकता है

सड़क पर एक युवक अपने रास्ते चला जा रहा था। अचानक सामने से एक ट्रक बहुत ही तेज़ रफ्तार से आया और अपना संतुलन खोकर उसने युवक को टक्कर मार दी। युवक तुरंत ही उछलकर एक तरफ गिरकर बेहोश हो गया और उसके सिर से खून बहने लगा। ट्रक चालक तेजी से ट्रक लेकर भाग गया। चारों ओर शोर मच गया। लोग चिल्ला रहे थे—'पकड़ो-पकड़ो! मारो-मारो! देखो बचकर भाग न जाए!'

ज़बान सभी की चल रही थी, लेकिन लथपथ पड़े युवक को सहायता देने कोई भी तैयार नहीं था। सभी डर रहे थे कि कौन झंझट में पड़े? पुलिस-चौकी पर गवाही देने कौन जाएगा? बाद में कोर्ट-कचहरी भी जाना पड़ सकता है। इसलिए लोग अपनी-अपनी राय देकर अपने-अपने रास्ते जा रहे थे।

एक विद्यार्थी से यह सब देखा नहीं गया। वह तुरंत आगे आया और अपनी जेब से रूमाल निकालकर उसने युवक के सिर से बहते हुए खून को रोकने के लिए पट्टी बाँधनी चाही, लेकिन रूमाल छोटा पड़ गया और वह विद्यार्थी उसके सिर पर पट्टी नहीं बाँध सका।

युवक को अचेत अवस्था में देखकर एक प्रौढ़ महिला ने अपना रिक्शा रुकवाया, युवक के सिर से खून बह रहा था। उसकी आँखों के सामने उसका अपना बेटा घूम गया। उसने तुरंत बीच बाज़ार में अपने कर्त्तव्य का पालन करते हुए अपनी साड़ी का एक बड़ा हिस्सा फाड़कर विद्यार्थी को देते हुए कहा—'बेटा, तुरंत इसका बहता खून रोको! यह भी मेरे-जैसी किसी माँ का बेटा है।'

इतना कहकर वह महिला संकोच से सिकुड़ती हुई रिक्शे में बैठ गई और रिक्शा आगे बढ़ गया।

शिक्षण संकेत

▸ इसी प्रकार की अन्य बोध कथाएँ या प्रेरक प्रसंग विद्यार्थियों को सुनाएँ ▸ मानवीय और नैतिक मूल्यों की जानकारी दें ▸ पाठ में आए नैतिक मूल्यों को जीवन में उतारने की प्रेरणा दें।